यह संकल्प आपका भाग्य बदल देगा...

हम समझते हैं कि "मैं आत्मा मूल रूप से परफेक्ट हूँ- मेरे अंदर शांति, प्रेम, शक्ति और पवित्रता के गुण पहले से मौजूद हैं।" बाहरी दुनिया भले ही इम्परफेक्ट हो, पर मेरी भीतरी परफेक्शन ही मेरा असली भाग्य तय करती है। इस सत्य को उदाहरण के साथ समझते हैं...

1. पहला उदाहरण – बाहर धूल हो सकती है पर हीरा हमेशा चमकता है। हीरा चाहे कीचड़ में गिर जाए, उसका मूल्य नहीं घटता। ठीक उसी प्रकार, बाहरी परिस्थितियाँ कितनी भी चुनौतिपूर्ण क्यों न हों, आत्मा अपनी परफेक्शन नहीं बदलती। अगर मैं अपनी कीमत और शक्ति याद रखूँ, तो परिस्थितियाँ मुझे नहीं गिरा सकतीं।

2. दूसरा उदाहरण – मौसम बदलता है पर सूर्य की रोशनी नहीं। बाहर बादल हो सकते हैं, पर सूरज अपनी रोशनी नहीं खोता। इसी प्रकार, लोग कैसा व्यवहार कर रहे हैं, यह उनका मौसम है। मेरी शांति, मेरा एटीट्यूड - यह मेरी सूर्य रोशनी है।

3. तीसरा उदाहरण – रेडियो पर क्या चल रहा है, यह आपके हाथ में नहीं; पर आपकी फ्रीक्वेंसी आपके हाथ में है। दुनिया में नकारात्मकता, गलत बातें, तनाव - यह सब "बाहरी चैनल" हैं। लेकिन मेरा भाग्य इस बात पर नहीं बनता कि बाहर क्या बज रहा है बल्कि इस पर बनता है कि मैं किस फ्रीक्वेंसी पर ट्यून हूँ।

अगर मैं खुद को बार-बार याद दिलाऊं, "मैं ठीक हूँ... मैं शुद्ध आत्मा हूँ... मैं शांत हूँ... मैं शक्तिशाली हूँ" तो मेरी फ्रीक्वेंसी दिव्य बनी रहती है और वही फ्रीक्वेंसी मेरे जीवन का श्रेष्ठ भाग्य रचती है।

4. चौथा उदाहरण – पौधे को पानी सही मिले तो वातावरण कितना भी कठोर हो, वह बढ़ता है। हमारी आत्मा भी एक पौधे की तरह है।

अगर मैं सही संकल्प, सही एटीट्यूड और सही स्पंदन(प्रकम्पन) से उसे सोचूँ, तो रिश्तों में, कार्य में, जीवन में - हर जगह वृद्धि होगी। बाहरी दुनिया कठोर हो सकती है, लेकिन मेरा भीतरी पोषण मजबूत है तो मेरा भाग्य स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ बनेगा।

मेरा भाग्य लोग नहीं लिखते, परिस्थितियाँ नहीं लिखतीं, समय नहीं लिखता। मेरा भाग्य मैं अपने संकल्पों से लिखता हूँ। "मैं आत्मा परफेक्ट हूँ, मेरा एटीट्यूड परफेक्ट है, इसलिए मेरा भाग्य भी परफेक्ट बनेगा।"

अमृतवेला हो मासूम बच्चे की तरह...!

अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए सबसे उत्तम समय ब्रह्ममुहूर्त है। जिस समय हमारे अति प्यारे परमपिता परमात्मा स्वयं हमें सर्वशक्तियों से श्रृंगारित करते हैं। ऐसे संगम के श्रेष्ठ समय के मध्य अपने को सर्वशक्तियों से भरने से वंचित न करें। इस समय का लाभ लेने के लिए न सिर्फ सोने के पहले का आधा घंटा बहुत ही महत्वपूर्ण है बल्कि अमृतवेले परमात्मा से श्रेष्ठ मिलन मनाने की नींव है। हमें बहुत ही ध्यान रखना है कि ऐसे समय को आलस व अलबेलेपन के कारण यूं ही गंवाना नहीं है। अगर इसे गंवाया तो ये ऐसा हुआ जैसे कि मुँह में से निवाला छीन लेना। अमृतवेले पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव बाबा अपने बच्चों पर सर्वस्व लुटाते हैं जिसमें वरदानों से भी भरपूर करते हैं। ये तभी सम्भव हो सकता है जब हमारी बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी। जैसे कि एक छोटे बच्चे की होती है।

चेहरे पर खुशी, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की झलक दिखाई दे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ओमशान्ति कहते ही क्या याद आता है? (बापदादा) और जब बापदादा याद आता है तो मन में खुशी की लहरें ऑटोमेटिकली अनुभव होती हैं क्योंकि बाबा ने हमें खुशियों का खज़ाना दे दिया और बाबा अभी ऐसी खुशियाँ देता है जो आधाकल्प चलेंगी, यह गैरंटी है। इसलिए बाबा से मन का जिगरी प्यार हो। खुशी के लिए स्पेशल महिमा है, खुशी गई माना सब गया, तो हेल्थ भी अच्छी नहीं होगी, वेल्थ का मज़ा नहीं आएगा। खुश नहीं हैं तो दवा का असर नहीं होगा। तब तो कहा जाता है खुशी जैसा कोई खज़ाना नहीं। ज्ञान मिलते ही खुशी हो जाती है क्योंकि कोर्स करने के बाद बाबा मेरा हो जाता है ना। अब भगवान मेरा हो गया तो बाकी क्या चाहिए? कुछ नहीं चाहिए। तो बाबा कहता है जो अन्दर खुशी होगी वो आपके चेहरे से दिखाई देनी चाहिए, चलन में फर्क पड़ेगा।

बाबा कहता है बच्चों का चेहरा गुलाब के फूल मुआफिक खिला हुआ होना चाहिए क्योंकि बाबा मिला, ज्ञान मिला तो जो हमें मिला और किसी के पास नहीं है। हमें ज्ञान मिला तो हम खुश हैं माना यह ज्ञान का रेसपॉन्ड है। वो नहीं है तो बाकी ज्ञान क्या है? तो सुबह से देखो मेरे चेहरे में सदा के लिए वो खुशी, वो सन्तुष्टता, प्रसन्नता रहती है? हमें कौन मिला है, अतीन्द्रिय सुख मिला है, तो हमारी शक्ल अवश्य बताएगी। हमारे अन्दर की खुशी जो है वो परमात्मा की देन है। बाबा है कौन? उनकी विशेषतायें स्मृति में लाना तो मजा आए, खुशी हो जाए। तो हम अभी साधारण नहीं हैं, दुनिया वाले हमारे चलन और चेहरे से ही समझ रहे हैं कि हमें कौन मिला है और क्या मिला है? अभी हमारा चेहरा बोले, चलन बोले। तो यह खुद ही अपने आपको चेक करके चेंज करना है। अपने चेहरे को रोज़ बाबा के ज्ञान के आइने में देखना कि सचमुच हमारा चेहरा देख के किसी को लगता है कि इन्हों को कुछ मिला है, इनको कोई प्राप्ति हुई है। फर्क तो दिखाई देना चाहिए ना, ऐसे नहीं मेरा चेहरा ही ऐसा है, तो चेहरे में रूहानी चमक हो।

हमारा बाबा लाइट है ना, तो बाबा को साथ रखने से कभी भी माया वार नहीं करेगी। माया तो सबके पास आती ही रहती है लेकिन हम बाबा के साथ हैं, तो माया हमारे सामने टिक नहीं सकती है, खुद ही माया सरेण्डर हो जाएगी। तो अकेले कभी नहीं रहना, बाबा मेरे साथ है।

सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

आप सब पाण्डव पति के प्यारे पाण्डव हो जिन्होंने अपने आपको इस संगम पर एक बाबा, एक बाबा की सेवा में बलिहार किया है। इन संगम की महा घड़ियों में अथक सेवाधारी बन डबल कमाई कर रहे हो। बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त के अतिन्द्रिय सुख का मजा इन घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। क्योंकि आप सभी ने अपने दिलतख्त पर एक बाबा को बिठाया है। बाबा भी कहता- मेरा दिलतख्त तुम बच्चों के लिए है। यह बन्धनमुक्त समर्पित जीवन भी बहुत बड़ी तकदीर है। आप देह और देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ बाबा की अलौकिक सेवा में अपना तन-मन-धन, जीवन सफल कर रहे हो। यह श्वास भी बाबा की है तो संकल्प भी बाबा के हैं। बाबा के सिवाए इन आँखों में दूसरा कोई बसता ही नहीं।

ड्रामा अनुसार संगम पर बाबा ने शिवशक्तियों को ज्ञान का कलश दे सेवाकेन्द्रों पर निमित्त रखा है। लेकिन आप सबकी यह महान तकदीर है जो आपने अपने आपको विश्व कल्याण की सेवा में अर्पित किया। ड्रामा अनुसार आपको यह महान भाग्य मिला है। उन प्रवृत्ति वालों को लौकिक बंधनों को निभाते अलौकिक सम्बन्ध में आने का पार्ट है। हज़ारों में विरले ही कोई-कोई को यह लॉटरी मिलती है। आप सबको स्पेशल निमंत्रण दे बुलाया है। इसलिए आप लोगों के भाग्य का हम क्या गुण गायें! आप डबल सेवाधारी, त्यागी तपस्वी हो।

आप सब इस अलौकिक भट्ठी में आये हो- भट्ठी का अर्थ ही है- अन्तर्मुख हो जाना। आप सब यहाँ विशेष 3-4 बातों के लिए आये हो। 1. आप बेहद सेवायें करके आये हो, उन सेवाओं से भी परे बाबा आप सभी को अपनी गोदी में विश्राम देगा। सेवायें तो बहुत करते, अब यहाँ आये हो तो बाबा की शीतल छाया में, यादों में खो जाना।

बाबा की हर मुरली में जो योग का मंत्र आता, उसी योग की बहुत गहरी, स्वीट साइलेन्स की बहुत सूक्ष्म शक्ति की अनुभूति करना। उसी योग के चार्ट को सम्पन्न करना। खास योग की अपने में इतनी शक्ति भरकर जाना जो वह याद की शक्ति सेवा में रहते ऑटोमेटिकली अपनी ओर खींचती रहे। इसके लिए जो भी कोई सूक्ष्म चिंतन हो, परचिंतन हो, दिल के अन्दर सूक्ष्म में संस्कार हो, स्वभाव हो, वृत्तियों में कोई विकल्प हो, इसी घड़ी से उसको ऐसे भूल जाओ जैसे वह मेरे थे ही नहीं। आप समझो हम संसार की न्यूज़ से परे, सब संकल्प-विकल्पों से परे अन्तर्मुखता की गुफा में आये हैं। अन्तर्मुखी तपस्वीमूर्त बन जाना है। यही हमारी अन्त मति सो गति है। इसी की हम सबको दरकार है, यही हमारी तपस्या है, याद है जो हमें विकर्माजीत बनाएगी। इसके लिए एकदम आवाज़ से परे, मन्सा के संकल्पों से भी परे रहना। ऐसा समझो हम बाबा की याद के व्रत में हैं, मौन में हैं। न मुख का बोल, न मन का बोल, न आवाज़ सुनना, न आवाज़ में आना। जब ऐसे अन्तर्मुखी हो जाएंगे तो चमकते हुए सितारे दिखाई देंगे। चमकती हुई मूर्त बन जाएंगे।

याद की भट्ठी का मज़ा लेने के लिए कम्पलीट मौन में रहना है, याद के व्रत में रहना है, निंद्राजीत बनना है। ज्ञान के मनन-चिंतन से, योग की शक्तियाँ भरपूर करनी हैं। हर कदम में शक्ति रूप बनना है। सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है। क्योंकि जीवन में हँसना, खेलना, बहलना तो होता ही रहता है परन्तु अभी जो बाबा लास्ट स्टेज बार-बार कहता, वह है ही याद के यात्रा की। इसलिए हमें यादों में समाना है और समाकर शक्ति भर जाना है।

ज्ञान को ध्यान से सुनकर कर्म और सम्बन्ध में यूज़ करो तो योग सहज हो जाएगा

राजयोगिनी दादी जानकी जी

सदा हर्षित रहने में देह का अभिमान विघ्न रूप बनता है। अपमान की फीलिंग आ जाती है। तो ऐसे देह अभिमान को निकालने के लिए बाबा ने ध्यान खिंचवाया कि सर्वशक्तियों को यूज़ करो उसमें भी खास परिवर्तन शक्ति। अपना अनुभव, विवेक कहता है कि अन्दर की लगन हो कि मुझे परिवर्तन होना है। कभी भी यह लगन ठण्डी न हो। ऐसे नहीं इसमें चेंज आनी चाहिए, यह परिवर्तन हो इस ख्याल के बजाए मुझे चेंज होना है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। जब विश्व परिवर्तन होगा तो क्या हमारे अन्दर परिवर्तन नहीं आएगा? यह अन्दर विश्वास हो, यह शब्द कोई घड़ी न भूले।

अपने आइने में देखते तो दिल गवाही देता है कि परिवर्तन से हम बाबा के सामने या सेवा में अनेक आत्माओं के सामने आ सकते हैं। नहीं तो मन खाता है कि मेरे में परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन होता जाता तो अपने में विश्वास बढ़ता जाता। परिवर्तन होता जाता तो फील करते कि हमारे में सहन शक्ति, समाने की शक्ति है। परिवर्तन न होने का कारण है - सहन शक्ति की कमी। सिर्फ समा लो तो सहन करने की भी आवश्यकता नहीं है। समाने की शक्ति अनेक बातों में गम्भीर, सयाना बना देती है। मुख से यह नहीं निकलेगा कि हम सहन करते हैं या मेरे में सहनशीलता की कमी है। सहनशीलता की कमी क्यों है? समाने की शक्ति नहीं है। तो एक-एक शक्ति बाबा ने वर्से में दी है है- एक-एक शक्ति कमाल का परिवर्तन कर सकती है। ज्ञान को इतना यूज़ करो जो सुनते-सुनाते हमारे जीवन में आ जाए। कथनी करनी समान हो जाए, बोल और कर्म में कोई अन्तर दिखाई न पड़े। कर्म व जीवन में आया हुआ है तो चेहरा बता देगा, बोल भले कम बोलें। अभ्यास करके देखेंगे तो दिन-प्रतिदिन हमारे बोल कम होते जाएंगे। बहुत बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लोगों को दुनिया में ऐसे हर्षित चेहरे दिखाई नहीं देते। उदास, मुँझे हुए चेहरे, रीयल दुःख से भरे हुए चेहरे हैं। हमारे रीयल सुख से भरे हुए चेहरे हैं। रीयल सुख, शान्ति, प्रेम और आनंद भरा हुआ है - कोई खोलकर देखे। यह सब ज्ञान की शक्ति के आधार से भरा है।

जब परिक्षाएं आती हैं तो कहते हैं कि अगर ज्ञान न होता तो पता नहीं मेरी क्या हालत होती। ज्ञान अन्दर से अशान्ति को खत्म करता है। ज्ञान, योग को भी सहज कर देता है। ज्ञान को अगर अच्छी तरह से समझकर जीवन में लायें तो योग कोई कठिन नहीं है। जैसे मैं संगमयुग पर बाबा के सामने बैठी हुई आत्मा ब्रह्माकुमार-कुमारी हूँ। बाबा कहते तुम सर्वोत्तम ब्राह्मण हो। सर्वोत्तम पार्ट कैसे होगा? अपने संकल्प, वचन व कर्म पर ध्यान देने से। जितना हम ज्ञान को ध्यान से सुनते हैं उतना ही कर्म में, सम्बन्ध में ज्ञान को यूज़ करते हैं। ज्ञान से हमारा सम्बन्ध बाबा से ऐसा हो जो लौकिक में यह भान न रहे कि यह मेरी बेटी है, मेरी बहन है... अगर मेरा छूटा हुआ है तो उनसे भी मेरा टूट जाता है। कैसी भी परिस्थिति में पुराना कोई याद न आये। अभी सब नया है। ज्ञान ने हमको नया बना दिया, नवीनता आ गई। यह हमारा जन्म दिव्य है। पढ़ाई है ही देवता बनने के लिए। ज्ञान मंथन करने से समझ में आता है, बुद्धि में बैठता है। ज्ञान मेरे जीवन में कहाँ तक आया है। जिससे मैं ज्ञानी तू आत्मा, बाप की प्रिय आत्मा बन जाऊं। वह तब बन सकती जब संकल्प, वचन में ज्ञान हो, ज्ञान युक्त, युक्तियुक्त हो, फिर योग अच्छा रहेगा।

ज्ञान दाता से देने वाले बाप से योग होगा। अन्दर से शुक्रिया निकलेगा बाबा आपने कितना अच्छा समझाया है। हम दे रहे हैं, नहीं। दाता का दिया हुआ है। देह अभिमान का दरवाजा बन्द करना है, अभिमान आये ही नहीं उसके लिए करनकरावन बाबा तू है। करता वही है, अभिमान आने की आवश्यकता नहीं है। काम हमने कुछ किया ही नहीं है, अभिमान फालतू झूठा लेकर बैठे हैं। सच का अभिमान नहीं होता। सच स्वतः दिखाई पड़ता है। जब तक झूठ मिक्स है तो देह अभिमान होता। सच से प्रीत है तो देह अभिमान रह नहीं सकता। जितना आगे बढ़ते जाते, आत्मा शुद्ध होती जाती तो सच्चा सोना दिखाई देता। बाबा कहते- जो अलाएं मिक्स हैं उसे निकालो। बाबा से गहरा सम्बन्ध रखो तो वह निकले।